रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09
मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रुपनगढ
(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)
राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर-305814
E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

सा विद्या या विमुक्तये
SVMM
Roopangarh

www.svmmcollege.in

Unit Wise

Notes

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ (अजमेर) राज.

8/1/2021

Western Thinker

Plato (प्लेटो) :- 427 - 347 BCE

राजनीतिक परिस्थितियाँ –

- ↳ एथेन्स में जन्म
- ↳ आपसी संघर्ष विभिन्न राज्यों में
- ↳ एथेन्स – नगर राज्य (पोलिस)
- ↳ एथेन्स – लोकतांत्रिक शासन (पेरिक्लीज का शासन)
- ↳ Eccelesia/Ekkelesia – जनसभा

सामाजिक परिस्थितियां –

- ↳ जनजातीय समाज
- ↳ समुदाय प्रधानता
- ↳ सामाजिक विषमता (दास प्रथा, महिलाओं को मताधिकार नहीं)

Plato

- ↳ सुकरात का शिष्य
- ↳ 30 निरंकुशों का शासन
- ↳ Apology
- ↳ Crito
- ↳ Republic
- ↳ Statesman
- ↳ Laws

Plato

Idealism

↓

आदर्शवादी (प्रत्ययवाद)

① नैतिकता – क्या होना चाहिए
② समुदाय/राज्य की प्राथमिकता
③ आंगिक राज्य
④ विचारों की प्राथमिकता
⑤ भौतिक विश्व विचारों का परिणाम (आत्मा, ईश्वर, Idea of Good)

बार्कर का कथन About प्लेटो

① आदर्श व्यक्ति कैसा होना चाहिए?
② आदर्श राज्य कैसा होना चाहिए?
③ आदर्श राज्य एवं आदर्श व्यक्ति के बीच समन्वय।

9|1|2021

L-2

"शरीर, आत्मा की परछाई है।"

"सद्गुण ही ज्ञान है।"

बार्कर – "प्लेटो का चिंतन दर्शन, राजनीति, मनोविज्ञान पर आधारित है।

सेबाइन - "प्लेटो का दार्शनिक राजा – Enlightened Despotism (विवेकपूर्ण निरंकुश

न्याय
- शासक (विवेक)
- सैनिक (साहस)
- उत्पादक (साधना)

शिक्षा
- ज्ञान (Knowledge)
  विचारों की दुनिया, आत्मा, शुभ का विचार (पारमेनिडिस का विचार)
- मत (Opinion)
  भौतिक विश्व, स्पेन्स, स्पार्टा (हेराक्लीटिज का विचार)

शिक्षा के चरण
- 10-20 वर्ष
  व्यायाम, संगीत
  उत्पादक वर्ग
- 20-30 वर्ष
  गणित, ज्योतिष
  सैनिक वर्ग
- 30-35 वर्ष
  दर्शन
  शासक वर्ग

शिक्षक
- चर्च
- विश्वविद्यालय
- परिवार

शासन
दर्शन + राजनीति
सत्य + शक्ति
- ① लोकतंत्र की आलोचना
  ② अज्ञानी शासक
- ① विशेषज्ञता
  ② सत्य, न्याय सौन्दर्य का ज्ञान
  ③ कला

साम्यवाद
संरक्षक वर्ग → शासक, सैनिक
- → निजी सम्पत्ति नहीं
- → निजी परिवार नहीं

आलोचना
- Karl Popper – Open Societies and its enemies : Plato, हीगल मार्क्स
  बचाव – गिल्बर्ट राइल, लेविन्सन
- मैक्सी – पहला कल्पनालोकीय विचारक
  बचाव – बार्कर – प्लेटो आदर्शवादी था।

प्लेटो का न्यायपूर्ण समाज
- दार्शनिक राजा
- शिक्षा
- साम्यवाद

प्लेटो का उप - आदर्श राज्य
- In Laws
- In Statesman

युग — देश (इटली, यूरोप)
काल (15th Century)

मैकियावली (1469 - 1527)

डनिंग का कथन — "मैकियावली अपने युग का शिशु था।"

सेबाइन — यदि मैकियावली 100 वर्ष पूर्व पैदा होता तथा 100 वर्ष बाद पैदा होता तो उसके विचार ऐसे न होते।

इटली में पुनर्जागरण आन्दोलन (1453)

इटली 5 भागो में विभाजित
- मिलान
- चर्च राज्य
  - ↳ सबसे Powerful राज्य
- नेपल्स
- वेनिस
- फ्लोरेन्स

फ्रांस, इंग्लैण्ड
शक्तिशाली राजतंत्र का उदय
↓
↳ राष्ट्र-राज्य का विचार
↳ संप्रभुता का विचार

मैकियावली — कूटनीतिज्ञ, इटली में मेडिसी का शासन
फ्रांसिसिको के शासन में दूत/राजदूत

* इटली का एकीकरण *

① मानव-स्वभाव — स्वार्थी, घमण्डी, संपत्ति चाहिए, सुरक्षा, शांति की खोज
सेबाइन — Universal Egoist
प्रत्येक मानव स्वार्थी
② पुनर्जागरण का प्रभाव
③ आनुभविक पद्धति/वर्णन

इटली का एकीकरण कैसे — ?

① शक्तिशाली प्रिंस/राजा
② Virtue / fortuna
↳ शासक का सद्‌गुण — शक्तिशाली हो (साम, दाम, दंड, भेद)
- शेर जैसा साहस
- लोमड़ी की तरह चालाक

"राजा जैसा हो वैसा दिखे नहीं"

शासन के लिए — प्रेम, भय, अवमानना, घृणा
Very Important

हिंसा — अंतिम विकल्प, Long term हिंसा नहीं, अत्यंत बर्बर हिंसा हो
Wolin — "Economy of Violence"

मैकियावेली
साध्य — ① शक्तिशाली इटली
साधन — किसी भी साधन का प्रयोग उचित

L-6 14/1/24
राजनीति — राज्य की शक्ति बढ़ाए वो राजनीति

राज्य की सुरक्षा — साध्य
शक्ति का प्रयोग — साधन

मैकियावेली
- नैतिकता का विरोधी (Immoral)? NO
- नैतिकता से तटस्थ (A-moral)? Yes
- नैतिकता? NO

बर्लिन (नैतिकता के मानदण्ड)
- व्यक्ति — सत्य, न्यायपूर्ण, सद्गुणी
- प्रिंस — नैतिकता प्रिंस पर लागू नहीं होती।

L- 7 15/1/21

टॉमस हॉब्स (1588- 1679)

↳ राजा - संसद के बीच संघर्ष

↳ वैज्ञानिक क्रान्ति के विचार
- गैलीलियो का गति का नियम
- देकार्त
- यूक्लिड-ज्यामिति

↳ • हॉब्स का कथन
"मैं और भय
जुड़वा पैदा हुए हैं"
तीनों के विरोधी
- राजा - विरोधी
- संसद - विरोधी
- चर्च - विरोधी

पद्धति → यांत्रिक भौतिकवाद

① **ज्यामिति**
- मूल्य मान्यता
- △ के तीन ∠ का योग - 180°
- मानव स्वभाव से - स्वार्थी, लालची है, सभी व्यक्ति सुरक्षा व यश चाहते है।

② **भौतिक**
- भौतिक तत्व
- भौतिक तत्व सदैव गतिशील
- मानव - गतिशील → आकर्षित / विकर्षित
  ↓ इच्छाऐं/विवेक
  ↓ आत्म संरक्षण

मानवीय इच्छा
↓
संघर्ष (प्राकृतिक अवस्था)
↓
ज्यामिति (परिकल्पना)
① राज्य का अभाव है } अराजकता
② सरकार अनुपस्थित }
③ विधि का अभाव
④ न्याय/अन्याय अनुपस्थित
⑤ बल/शक्ति ही न्याय है।
⑥ पाशविक, बर्बर जीवन

प्राकृतिक विधि (सकारात्मक विधि)
(Positive Law)
↓
सुविधा का नियम

जॉन लॉक, प्राकृतिक अधिकार — LLP

① प्राकृतिक विधि - ईश्वरीय

② प्राकृतिक अधिकार
- → जीवन
- → स्वतंत्रता
- → सम्पत्ति

स्वतंत्रता — विधि के द्वारा स्वतंत्रता का संरक्षण होता है संवर्धन भी होता है।

स्टुवर्ट शासन → कैथोलिक — प्रोटेस्टेन्ट - जनता — धार्मिक एकरूपता (Religious Uniformity)

An Essay Tolration
धार्मिक सहिष्णुता

तानाशाही शासन
पूर्णसत्तावादी शासन
पितृसत्तात्मक शासन
— यहां आजादी नहीं मिलेगी

स्वतंत्रता (आजादी) —— सीमित संवैधानिक शासन में

शासन सीमित किससे
↓
प्राकृतिक अधिकार
↓
व्यक्ति

कैसे
↓
शक्ति पृथक्करण
- विधायिका
- कार्यपालिका (न्यायपालिका)
- ~~संघीय~~ मानी शक्ति (Federative Power)

किस प्रकार
↓
सरकार के कार्य सीमित
- विधि व्यवस्था
- व्यक्ति की स्वतंत्रता
- बाहरी शत्रुओं से रक्षा

सम्पत्ति

① भौतिक सम्पत्ति — भवन, वाहन, भूमि

② शारीरिक सम्पत्ति - व्यापक सम्पत्ति

सम्पत्ति ईश्वर की देन

निजी सम्पत्ति — जिस भी प्राकृतिक पदार्थ पर व्यक्ति अपना श्रम लगा देता है। वह उसकी निजी सम्पत्ति

मूल्य का श्रम सिद्धान्त

मैकफर्सन की अभिमान्यता — लॉक पूंजीपतियों का विचारक

जेम्स टुली
→ लॉक सीमित संवैधानिक शासन का समर्थक
- लॉक ने असीमित सम्पत्ति का समर्थन की
- कारोबार

L-10

J.S. Mill (1806-1873)

प्रभाव →

बेन्थम - उपयोगितावाद

डी•टाकविले - Book (Democracy in America), चार्टिस्ट आन्दोलन

विषमताएं - समाज में, आर्थिक

ऑगस्ट कॉम्टे - समाजशास्त्री (Positivism - वैज्ञानिक)

व्यक्तिगत - हैरियट टेलर (GF) से प्रभावित - The Subjection of Women
पिता से प्रताड़ित

बेन्थम - उपयोगितावाद

① सुख प्राप्ति
② दुःख को दूर करना
③ सुखो में वृद्धि
④ मात्रात्मक
⑤ अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख

सुखो की मात्रा समान तो
- कविता पढ़ना
- पुशपिन खेल

मिल -

① उपयोगितावाद
② प्रत्येक व्यक्ति सुख वृद्धि के लिए कार्य करता है।
③ सुखो में गुणात्मक अन्तर ! गुण
- उच्चतर - मानसिक, आन्तरिक [नैतिक विकास, आत्म-साक्षात्कार, आध्यात्मिक विकास]
- निम्नतर - शारीरिक, बाह्य

वेपर - मिल पहला व्यक्तिवादी और अंतिम उपयोगितावादी है।

1:10 Min

राज्य का वकत (Worth) व्यक्ति के वकत (Worth) से निर्धारित होता है।

★ प्रतिनिधि लोकतंत्र ★

- → शासन का सर्वश्रेष्ठ रूप
- → शिक्षा प्रणाली – लोकतंत्र
- → लोकतंत्र – एक जीवन शैली

[illegible] – "लोकतंत्र [illegible] शासित [illegible] करते है।"

[illegible] → ~~[illegible]~~ [illegible] ~~[illegible]~~

Reluctant democrat कहा।

क्योंकि

- ↳ एक व्यक्ति एक वोट को नहीं मानता था।
- ↳ पिछड़े समाजों के लिए लोकतंत्र नहीं
- ↳ उपनिवेशवादी – विनम्र अधिनायकवादी ये लोग सही है।

Benevolent despotism

- ↳ भारत अनपढ़, झूठे, मक्कार लोगों का देश
- ↳ असभ्य जातियों पर प्रतिनिधित्व का शासन पर औचित्य नहीं

उदारवाद का संशोधन (रिवाइजन)

परम्परागत उदारवाद

① राज्य के कार्य सीमित
- → पुलिस
- → सेना
- → समझौते की स्वतंत्रता

② बाजारवादी, प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था

परिणाम —
- ↳ आर्थिक विषमता
- ↳ मजदूरों के श्रम का शोषण
- ↳ असमानता

Political Economy by Mill

राज्य की भूमिका

(नियंत्रणकारी) नकारात्मक
- पुलिस
- समझौते की स्वतंत्रता
- सेना

सकारात्मक (कल्याणकारी राज्य)
- ↳ शिक्षा
- → स्वास्थ्य की सुविधा
- → श्रमिकों के कार्य समय निर्धारित
- ↳ पेंशन

महिलाओं पर विचार

The Subjection of Women

① स्वतंत्रता → पुरुष, → महिला

② व्यक्ति की गरिमा

③ समानता

④ परिवार में महिलाएं दास का जीवन व्यतीत कर रही है।

⑤ लोकतंत्र - महिलाओं का मताधिकार

⑥ राज्य का विकास — महिलाओं को स्वतंत्र पहचान
मनोबल का विकास

कार्ल मार्क्स

"पूंजीवाद के पहले साम्यवादी क्रान्ति हो ही नहीं सकती है।" Marx

पूंजीवाद में शोषण व्यवस्था

① विनाश के बीज
② सर्वहारा (श्रमिक)
③ वर्ग - चेतना
④ भौतिक-परिस्थितियाँ

पूंजीवाद

① उत्पादन ज्यादा
↓
② खपत कम
↓
③ सर्वहारा की आजीविका कम
↓
④ उत्पादन कम
↓
⑤ मजदूरों की छंटनी
↓
⑥ ~~क~~ फैक्ट्री पर ताला

"कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो"

⑥ साम्यवाद

- प्राइवेट प्रापर्टी समाप्त
- वर्ग समाप्त
- राज्य / सरकार विलुप्त
- धर्म / विचारधारा अनावश्यक
- उत्पादन साधनों पर समुदाय का नियंत्रण

"इतिहास का वर्तमान चरण अपने पूर्व चरणों से बेहतर होगा।" Marx

पेरिस कम्यून, अराजकतावाद, समाजवादी लोकतंत्र
↑ से पूर्व की घटनाएँ

⑦ सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व

- श्रमिकों का अधिनायकत्व।
- पूंजीवाद के अवशेष समाप्त।
- साम्यवाद का मार्ग बनाएगा।
- बहुमत का शासन
- संक्रमणकालीन राज्य
- क्षमतानुसार कार्य करेगा व्यक्ति। कार्य के अनुसार वस्तुएँ प्राप्त होगी।
- सर्वहारा वर्ग का राज्य कुछ समय बाद अपने - आप विलुप्त हो जायेगा।

साम्यवाद
- शासक / शासित का अन्तर समाप्त
- लोकतंत्र
- विचारों का अबाध - स्वतंत्रता
- समानता
- बंधुता

फोयरबाख का भौतिकवाद
↓
भद्दा भौतिकवाद Contemplative Materialism

संवेदनशील पूंजीवाद

मार्क्स की आलोचना

जेम्स बर्नहम (Mangerial Revolution) —

- समाज के दो वर्ग — पूंजीपति / सर्वहारा
  एकदम सरलीकृत वर्गीकरण है यह स्वीकार नही बर्नहम को

- Compassionate Capitalism (~~संवेद~~ संवेदनशील

- समाज परिवर्तन — क्रान्तिकारी
  Karl ~~of~~ Popper — क्रान्ति ठीक नही है।
  समाज परिवर्तन का तरीका - समाज अभियांत्रिकी (Social Eng.)
  Piecemeal
  धीमा
  संवैधानिक
  लोकतांत्रिक
  वैधानिक

9:46

- मार्क्स
  आर्थिक नियतिवादी
  Economic Determinist

① अर्थव्यवस्था प्राथमिक

② अल्थ्यूसर — निर्धारक / प्रभुत्ववादी

आलोचक
आर्थिक अपचयवादी
Economic Reductionist
↓
अर्थव्यवस्था एक मात्र कारक है।

उत्तर उपनिवेशवादी

एशियाटिक मोड of Production

Prison Notebook ग्रामस्की (1891 – 1937)

ग्रामस्की (1891-1937)

② इटली
- औद्योगिक
- शहरीकरण
- लोकतंत्र

मार्क्स (1818 - 83)

① पूंजीवाद के बाद साम्यवाद क्रान्ति

② साम्यवादी क्रांति — oct 1917 in Russia
- लेनिन
  - साम्यवाद
- श्रमिक पिछड़ा
- कृषि आधारित
- राजा का शासन

③

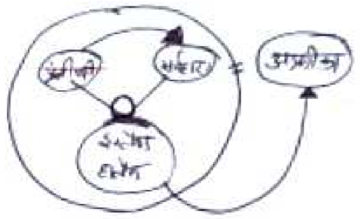

④ कमजोर कड़ी (Weakest Link)
- रूस
  - साम्यवादी दल Powerful
  - सर्वहारा (मजदूर, किसान)

10

मार्क्स
- ↳ राज्य -बल प्रयोग संस्था
  - पुलिस
  - सेना
- ↳ राज्य - शोषण का यंत्र
- ↳ वर्गीय यंत्र
- ↳ भौतिकवादी
- ↳ वैज्ञानिक (Positivistic)
- ↳ आर्थिक नियतिवाद
- ↳ नागरिक समाज
- ↳ अर्थव्यवस्था प्राथमिक
- ↳ आर्थिक गतिविधियां - by civil society
  - शासन की सहमति
  - दमन के लिए
- ↳ Domination (प्रभुत्व / आधिपत्य)

ग्रामस्की — क्रोचे से प्रभावित
- ↳ राज्य द्वारा बल प्रयोग
  - पुलिस
  - सेना
- ↳ वैचारिक आधार
  - परिवार
  - चर्च
  - विद्यालय
  - मीडिया
  - विश्वविद्यालय
- ↳ Civil socity (नागरिक समाज) — परिवार, चर्च, Action, मीडिया, University
- ↳ आधिपत्य (Hegemoney)

9:10 to 9:

9:

मार्क्स

↳ रूस में क्रान्ति – लेनिन द्वारा
→ साम्यवादी दल
↳ साम्यवादी दल – व्यवसायिक, प्रशिक्षित
↳ सीमित दल

↳ रूस में क्रान्ति — गतिशील युद्ध (War of Manoeuvre)

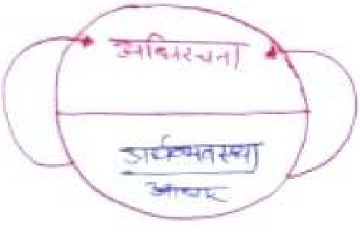
अधिरचना
अर्थव्यवस्था
आधार

आधिपत्य (Domination)
↓ ← बल द्वारा
राज्य/सरकार द्वारा
↓
अर्थव्यवस्था पर

ग्राम्शी

↳ इटली – लोकतांत्रिक देश — संसद सरकार …, नागरिक समाज
↳ इटली में साम्यवादी दल।
↳ दल में राजकुमार मानना चाहिए है।
→ आधुनिक प्रिंस (New Prince)

↳ इटली में होगा — स्थितियों का युद्ध (War of Positions)

[क्रान्ति] – "निरंतर चलने वाली प्रक्रिया"

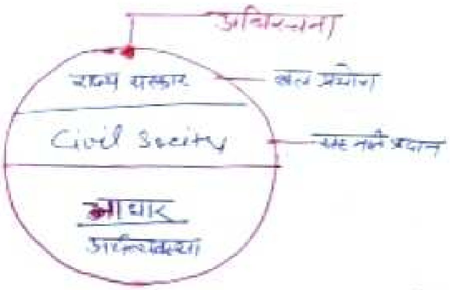
अधिरचना
राज्य सरकार
बल प्रयोग
Civil Society
सहमति प्रदान
आधार
अर्थव्यवस्था

9:55

"ग्राम्शी – राज्य की सापेक्ष स्वायत्तता"
(राज्य अर्थव्यवस्था पर आंशिक निर्भर)
"मैकियावली – राज्य पूर्ण स्वायत्त"
"मार्क्स – राज्य अर्थव्यवस्था पर निर्भर"

10:05

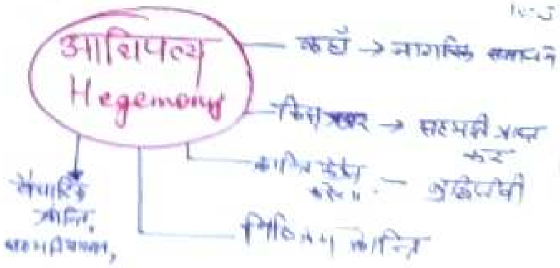
आधिपत्य
Hegemony
कहाँ → नागरिक समाज ने
किस प्रकार → सहमति प्राप्त कर
कौन करेगा — बुद्धिजीवी
शिक्षा क्रान्ति
सांस्कृतिक क्रान्ति, बहुसांस्कृतिकता,

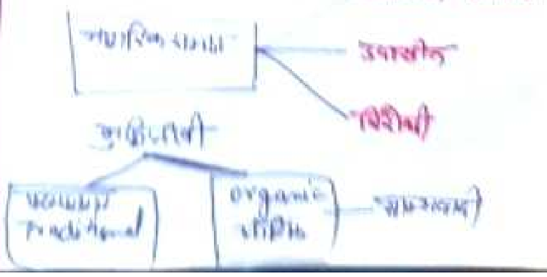
आस्था / समर्थक
नागरिक समाज
उदासीन
विरोधी
बुद्धिजीवी
परम्परागत
Traditional
Organic
जैविक
सामान्यजन

2 - 26th 9th feb 2021

** रूसो ** (1712 - 78)

"Paradox of Liberty" — सेबाईन

"व्यक्ति को स्वतंत्र होने के लिए बाध्य किया जायेगा।"

स्वतंत्रता

- प्राकृतिक स्वतंत्रता (Natural Liberty)
- नागरिक स्वतंत्रता (Civil Liberty)
- आर्थिक समानता
- विषमताएँ
  - मालिक - दास
  - मालिक - मजदूर
  - शासक - शासित
- बाध्यकारी स्वतंत्रता
- forced freedom

लोकतंत्र

- प्रत्यक्ष लोकतंत्र (Direct democracy)
- प्रतिनिधि लोकतंत्र की आलोचना
- व्यक्ति सामुदायिक प्राणी (नागरिक समाज)
- जनमत संग्रहीय (Plebsoterian)
- जनसंप्रभुता (Popular Soverignty)

अधिकार

समुदाय

मानव स्वभाव (Will)
- Real Will — समुदाय भलाई, सभी की नैतिक इच्छाओं का योग
- Actual Will — स्वार्थ, अपनी भलाई

संप्रभुता
- हॉब्स — वैधानिक - एक व्यक्ति/राजा में (अदेय, सर्वोच्च, असीमित, अविभाजित)
- लॉक — राजनीतिक - निर्वाचक मण्डल (बहुमत
- रूसो — जनसंप्रभुता (हॉब्स व लॉक का मिश्रण) समूचा समाज → राज्य → General Will (सामान्य इच्छा)

सामान्य इच्छा (General Will)

↓

राज्य / समुदाय / सम्प्रभुता

↓

आंगिक

↓

नैतिक

रूसो के चिंतन में समाजवादी तत्व

↳ आर्थिक समानता

↳ पूंजीवाद के विरुद्ध

↳ समुदाय को प्राथमिकता

उदारवादी तत्व

↳ व्यक्ति की स्वतंत्रता

↳ लोकतंत्र (प्रत्यक्ष लोकतंत्र

आदर्शवादी तत्व

↳ नैतिक व्यक्ति

↳ आंगिक राज्य

↳ राज्य/समुदाय को प्राथमिकता

नारीवाद का विरोधी

↳ Emile

↳ महिलाओं के घरेलू प्रवृति

↳ महिलाओं को ज्यादा शिक्षा नहीं

फासीवादी तत्व

↳ बाध्यकारी स्वतंत्रता

↳ संप्रभुता असीमित

↳ राज्य को बाध्य कि
वह Real will के
अनुसार कार्य करें।

	हॉब्स	रूसो	लॉक
मानव स्वभाव	स्वार्थी	भद्र पशु (Noble Savage	अच्छा
प्राकृतिक अवस्था	अराजकतावादी	पहले शांति सम्पन्न बाद में अराजक (विकासवादी अवस्था)	शान्तिपूर्ण
सामाजिक समझौता	एक समझौता परिणाम – राज्य	एक समझौता परिणाम-प्रत्यक्ष लोकतंत्र समूचा समुदाय में शामिल (सम्पूर्ण)	दो समझौते परिवार – नागरिक समाज सरकार (ट्रस्ट)

संत आगस्टाइन (St. Augustine)

(354 - 430 A.D.)

- संत आगस्टाइन को आध्यात्मिक क्षेत्र में चर्च की स्वाधीनता का प्रतिपादक माना जाता है.

- राज्य और उसकी प्रभुता के संबंध में उसकी धारणा यूनानी विचारकों (प्लेटो - अरस्तू) से पूरी तरह भिन्न है. यूनानी विचारक जहां मानव जीवन पर राज्य की सर्वोच्च सत्ता के प्रतिपादक हैं, वहीं आगस्टाइन की धारणा इससे भिन्न और विपरीत तथा पूर्णतया अलग है.

- संत आगस्टाइन का दर्शन उसके ग्रंथ 'De Civitate Die' जिसका अंग्रेजी अनुवाद 'The City of God' के नाम से है. आगस्टाइन के विचारों का मुख्य उद्देश्य थे -

1. रोमन साम्राज्य का पतन इसाई धर्म को अपनाने के कारण नहीं हुआ था.

2. ईसाई संघ को शक्तिशाली बनाना तथा उसका राज्य स्थापित करना. (चर्च का राज्य)

3. ईसाई धर्म के विरुद्ध लगाये गये आरोपों का खंडन करना.

उसका मानना था कि रोम पर आक्रमण ईश्वर की इच्छा से हुआ था ताकि ईश्वर के नगर की बुनियाद रखी जा सके.

आगस्टाइन ने दो राज्यों की धारणा का प्रतिपादन किया -

1- ईश्वरीय राज्य
2- लौकिक राज्य

साथ ही लौकिक राज्य को वह ईश्वरीय राज्य के अधीन मानता है. लौकिक राज्य के नियमों तथा कानूनों का मानना वहीं तक उचित है, जहां ईश्वर के प्रति कर्तव्य का उल्लंघन न होता हो.

आगस्टाइन की इस धारणा का परिणाम स्वभावत: राज्य को चर्च के अधीन करना था, जैसा कि आगे चलकर टामस एक्वीनास तथा ग्रेगरी सप्तम आदि ने किया. आगस्टाइन, राज्य को चर्च का अंग नहीं बनाना चाहता, क्योंकि उसको अपनी शक्ति ईश्वर से प्राप्त होने के कारण प्रजाजन से अपनी आज्ञापालन कराने का अधिकार है. परंतु वह आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता.

- इस प्रकार आगस्टाइन का उद्देश्य लौकिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में स्पष्ट विभाजन रेखा खींचना है.
- और यदि राजा आध्यात्मिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करता है तो प्रजा को उसके प्रति भक्ति का परित्याग कर देना चाहिए.

- आगस्टाइन – लौकिक क्षेत्र मे राज्य की और आध्यात्मिक क्षेत्र मे चर्च की सत्ता का प्रतिपादन करता है. साथ ही इन दोनों सत्ताओं को एक दूसरे से सहयोग करना चाहिए. साथ ही वह लौकिक क्षेत्र (राज्य पर) पर आध्यात्मिक क्षेत्र (चर्च की) की श्रेष्ठता का प्रतिपादन अवश्य करता है.

- सन्त अम्ब्रोज के महान शिष्य संत आगस्टाइन का जन्म 354 में उत्तरी अफ्रीका में हुआ था, । उसने अनेक ग्रंथों की रचना की जिसमें उसकी आत्मकथा 'द कन्फेशन्स' तथा 'द सिटी आफ गॉड' बहुत महत्वपूर्ण है. मध्यकाल के इस विचारक की 430ई० में मृत्यु हो गई.

- आगस्टाइन का ग्रंथ "द सिटी आफ गाड' मे इतने विषय हैं कि – सेबाइन इसे "विचारो की खान "कहता है.

संत आगस्टाइन की दो प्रमुख धारणाएं हैं — इतिहासदर्शन, और 'दो राज्यों की अवधारणा.

• इतिहास दर्शन (Philosophy of History) —

- द सिटी आफ गाड की रचना – ईसाई धर्म के विरुद्ध लगाये गये इस आरोप के खण्डन के लिए किया था कि – उसके कारण ही रोम का पतन हुआ है, क्योंकि

रोम के पुराने मूर्तिपूजक धर्म (Paganism) के उपासकों ने इस पतन का आरोप ईसाई धर्म के संस्थापकों पर लगाया था।

- मूर्तिपूजकों का मानना था कि — जब तक रोम में बृहस्पति आदि देवताओं की पूजा होती थी, तब तक उसे कोई पराजित नहीं कर सका।

- आगस्टाइन ने इसके जवाब में कहा कि यह विश्वास करना मूर्खता है कि साम्राज्यों का उत्थान या पतन देवताओं के प्रसन्नता या प्रकोप से होता है।

- रोम के इतिहास का उल्लेख करते हुए उसने लिखा कि पैगन धर्म के प्रभाव के कारण ही रोम पर अनेक बर्बर जातियों के आक्रमण होते रहे हैं। पैगन मत ⇒ रोमन साम्राज्य में जो कमजोरियां उत्पन्न की हैं ⇒ वे ही रोम के पतन का कारण बनी।

- ईसाई धर्म ने रोमवासियों की रक्षा की, क्योंकि आक्रमण के समय व्यक्तियों ने रक्षा के लिए चर्च का शरण लिया।

[कार्ल मार्क्स की भांति, आगस्टाइन भी मानव इतिहास के प्रवाह को एक संघर्ष के रूप में देखता है; मार्क्स में यह संघर्ष आर्थिक शक्तियों के बीच होता है, जबकि आगस्टाइन इसे पाप तथा पुण्य का द्वन्द्व मानता है]

• दो राज्यों की अवधारणा – (concept of Two States)

राजनीतिक विचारों के क्षेत्र में आगस्टाइन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण दो राज्यों की अवधारणा है. । ये दो राज्य है – 1. सांसारिक राज्य
2. ईश्वरीय राज्य

• सांसारिक राज्य का संबंध शरीर से होता है, यह नाशवान है. जबकि ईश्वरिय राज्य का संबंध आत्मा से है, यह शाश्वत है तथा मनुष्य के आध्यात्मिक क्षेत्र से संबंधित है. मानव को शांति केवल ईश्वरीय राज्य में ही प्राप्त.

• ईश्वरीय राज्य एक ऐसा सर्वव्यापक समाज है, जिसका सदस्य कोई भी व्यक्ति मानव होने के नाते बन सकता है, परन्तु कोई मनुष्य होने के नाते स्वमेव इसका सदस्य नहीं बन सकता. जब से मनुष्य का पतन हुआ है, तब से मनुष्य केवल प्रभुकृपा से ही इसका सदस्य बन सकता है. और यह कृपा प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त नहीं होती, यह उन्हीं को प्राप्त होती है, जो ईसा में विश्वास करते हैं, । इस तरह आगस्टाइन के ईश्वीय राज्य के क्रोड में केवल वही व्यक्ति आते हैं जो ईसाई चर्च के सदस्य हैं ।

• ईसाई समाज ⇒ धार्मिक संस्कारों में भाग लेकर ईश्वर की कृपा प्राप्त ⇒ विश्वव्यापी ईसाई समाज के विचार की भूमि संपूर्ण मध्ययुग ⇒ "पवित्र रोमन साम्राज्य, ईश्वरीय राज्य पर आधारित"

- ईश्वर ने ईसाई राज्य का निर्माण सबके लिए किया.

⇓

व्यक्तियों ने अपनी कुप्रवृत्तियों के कारण इसे खो दिया.

⇓

पुनः ईश्वरीय राज्य की सदस्यता 'प्रभुकृपा' से ही संभव

⇓

प्रभु की कृपा प्राप्त करने का उपाय - चर्च के धार्मिक संस्कार

⇓

चर्च ही ईश्वरीय राज्य का प्रवेश द्वार है.

⇓

केवल ईसाई ही ईश्वरीय राज्य में प्रवेश पा सकते हैं.

⇓

गैर ईसाई इसमें प्रवेश के लिए सदा अयोग्य रहेंगे

⇓

ईश्वरीय राज्य में प्रवेश हेतु 'ईसाई धर्म' अपनाना

⇓

संत आगस्टाइन के दो राज्यों का सारतत्व

MARGDARSHAN

- आगस्टाइन के अनुसार – "ईश्वरीय राज्य समस्त सद्गुणों पर आधारित एक व्यवस्था है." न्याय और शांति की प्राप्ति इसी में की जा सकती है.

न्याय (Justice)

⇓

व्यवस्थित अनुशासित जीवन तथा व्यवस्था के अनुसार कर्तव्यपालन

⇓

ईश्वरीय राज्य का एक रूप

⇓

सच्चे न्याय की प्राप्ति ईसाई राज्य में ही संभव.

शांति (Peace)

↓

सद्भावना और सामंजस्य में भागी व्यक्तियों का संबंध

↓

शांति की दो शर्तें — सभी मनुष्य एक ही विश्व व्यवस्था के अंग
— एक सार्वभौमिक कानून के अधीन

↓

ऐसा केवल वहीं संभव है जो ईसाई मत मानते हो और ईश्वर से प्रेम करते हो.

- सेंट आगस्टाइन के दर्शन में क्रमबद्धता का अभाव था, और उसके ग्रंथ राजनीतिक प्रबंध के रूप में नहीं रचे गये, फिर भी उनका राजनीतिक महत्व है.
- मध्यकालीन यूरोप पर सेंट पाल के विचारो के अतिरिक्त किसी अन्य लेखक का उतना प्रभाव नहीं पड़ा जितना कि - आगस्टाइन का.
- सेबाइन — 'द सिटी आफ गाड' विचारो की खान है जहां से प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों ने विचार लिए.
- सेंट थामस एक्वीनास, दांते, ग्रोशियस ने "The city of God' से अपने विचार ग्रहण किए। गिलेसियस - दो तलवारों का सिद्धान्त भी काफी हद तक इसी से प्रभावित है।
- आगस्टाइन वह प्रथम विचारक - जिसका उद्देश्य मूर्तिपूजक धर्म को जीतना तथा ईसाई धर्म को प्रतिष्ठित करना है " Justification theory of christianity " जिस पर मध्यकाल का पूरा चिंतन आधारित है।"